अपने सुर्ख लहू से शहादत की परम्परा को रौशन करने वाले कामरेड शैलेन्द्र सिंह, कामरेड रवीन्दर मेहता और कॉमरेड रामपुकार कोरवा को लाल सलाम!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

मौत को मात देकर अपने सुर्ख लहू से शहादत की परम्परा को रौशन करने वाले का. शैलेन्द्र सिंह, का. रवीन्दर मेहता और कॉ. रामपुकार कोरवा को लाल सलाम!

कामरेड नितांत, सूरज, साकेत आदि नामों से जाने वाले कॉमरेड शैलेन्द्र सिंह अपने आपको जनता के लिए न्यौछावर कर पिछले एक दशक से क्रान्तिकारी आन्दोलन को आगे बढ़ाने हेतु अथक प्रयास किया। पिछले दस वर्षों से कठोर संघर्ष में तपकर फौलाद बने कॉमरेड शैलेन्द्र सिंह बिहार-झारखंड के क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास के पन्नों और संघर्षरत साथियों व जनता के दिलों पर अमिट छाप छोड़ गए। उनकी शहादत से बिहार-झारखंड के क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए, खासकर बीआरसी के द्वितीय प्लेनम द्वारा नवगठित आरसी एवं आरएमसी के लिए बहुत बड़ा क्षति है।

कामरेड रवीन्दर मेहता ने बहुत कम समय में अपने आपको पीएलजीए के एक आदर्श योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया था। इन्होंने मात्र 6 महीनों के पार्टी जीवन में प्लाटून न. 29 के महत्वपूर्ण सदस्यों में गिने जाने लगे थे। इनकी शहादत से हम एक ऐसे बहादुर योद्धा को खो दिया, जिनके अन्दर बहुत कम समय में ही कमांडर/नेतृत्व की जिम्मेवारी निभाने की क्षमता का विकास हो रहा था।

कामरेड रामपुकार उर्फ शेखर अपने आप को जनता के लिए न्यौछावर कर पिछले छः वर्षों से वर्ग संघर्ष में अपनी योगदान दे रहे थे। पूरी इमानदारी और लगन से काम करते हुए पार्टी, पीएलजीए के साथ-साथ झारखण्ड-छत्तीसगढ़ सीमांत क्षेत्र की जनता के दिलों पर अमिट छाप छोड़कर आज अपने नाम इतिहास के उन स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कर लिए हैं, जिसे आने वाली पीढ़ियां अपना दर्शन मानकर अनुकरण करेंगी। इनकी शहादत से हमें भारी क्षति हुई है, खासकर झारखण्ड-छत्तीसगढ़ सीमांत क्षेत्र में कार्यरत सीसी 1 कंपनी व वहां के

यह भाकपा (माओवादी) की बी-जे सैक के अंतर्गत बिहार-झारखण्ड-उत्तरी छत्तीसगढ़-उत्तर प्रदेश सीमांत रीजनल कमिटी द्वारा अप्रैल 2012 में प्रकाशित किताबों पर आधारित है।

राजनीतिक-सांगठनिक कार्यों में भारी क्षति हुई है। आज हम एक नौजवान व उर्जावान कमांडर को खोया है। जिनके अन्दर नेतृत्व की काफी संभावनाएं थीं।

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी इन तीनों शहीदों को नम आंखों से विनम्रतापूर्वक भावभिनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है और उनके महान कम्युनिस्ट आदर्शों को ऊंचा उठाकर उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेती है। आइए, इस मौके पर इन शहीद कॉमरेडों की जीवनियों पर नजर डालें।

कामरेड शैलेन्द्र उर्फ नितांत

शोषित-पीड़ित मेहनतकश वर्ग के इतिहास के पन्नों में 29 अगस्त 2010 भारी दु:ख भरा दिन था। इस दिन शोषित जनता का प्यारा सपूत और भाकपा (माओवादी) के बिहार रीजनल कमेटी सदस्य व बीआरएमसी इन्चार्ज कॉमरेड शैलेन्द्र सिंह उर्फ नितांत एवं पीएलजीए के बहादुर योद्धा कॉमरेड रवीन्दर ने सरकार पोषित प्रति-क्रान्तिकारी गुंडा गिरोह टीपीसी से लोहा लेते हुए वीरगति को प्राप्त किया। यह दुर्घटना तब घटी जब चतरा जिला के लावालौंग थाना अन्तर्गत बनवार गाँव में हमारे पार्टी के एक कार्यकर्ता के घर सहित वहाँ के दर्जनों क्रान्तिकारी किसान जनता के घरों को प्रतिक्रान्तिकारी गुंडा गिरोह टीपीसी द्वारा जलाया जा रहा था। चल-अचल संपत्ति को लूटा व बर्बाद किया जा रहा था तथा महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों सहित दर्जनों निहत्थों को बुरी तरह से पीटा जा रहा था। इसके कुछ ही दूरी पर कॉमरेड नितांत पीएलजीए के कंपनी के साथ रुके हुए थे। प्रति-क्रान्तिकारियों द्वारा मचाये जा रहे उक्त तबाही व ढाए जा रहे कहर की खबर सुनकर उनसे बर्दास्त नहीं हुआ और तुरंत कंपनी कोर ग्रुप व कमांड को सूचना देकर ग्रामीणों की रक्षा के लिए दुश्मनों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई हेतु चल पड़े। जिनका पहला उद्देश्य दुश्मनों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई कर जनता की जान-माल के नुकसान को बचाना था और इस उद्देश्य में वे सफल भी रहे। बनवार में तबाही मचा रहे गुंडा गिरोह ने पीएलजीए को आते देख गोली चलाने लगे। जिसका जवाबी हमला करते हुए गुण्डों को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। दोनों ओर से चले जबरदस्त मुठभेड़ में दो गुण्डे मारे गए व कई घायल हुए तथा अंत में पीठ दिखाकर भाग खड़े हुए। जब कम्पनी जनता को दिलासा देकर लौट रही थी तभी बगल के मकई के खेत में कुछ गुण्डों के छिपे होने की आहट सुनकर कॉ. नितांत ने आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया, इतने में एक व्यक्ति मकई के खेत से हाथ ऊपर कर हथियार डाल दिया। जिसे वर्गीय सवाल पर समझाने लगें "तुम एक गरीब किसान का बेटा होकर भी इन

गरीब किसानों के घरों को क्यों जला रहा था? शोषित वर्ग के होकर शोषक-शासक वर्ग के हित में क्यों काम कर रहे हो? आत्मसमर्पण किया व्यक्ति काफी डरा हुआ था। उसे समझा रहे थे कि 'घबराओ नहीं तुम आत्मसमर्पण किए हो तुम्हें कुछ नहीं करेंगे। हमारा सिद्धांत है युद्धबंदियों के साथ बुरा बरताव नहीं करते'' इत्यादि। उसे समझाने व उससे पूछताछ करने के दौरान बगल में छिपे कुछ और गुण्डें जिनके बारे में कॉमरेड नितांत सहित सेक्शन के अन्य साथियों ने भी नहीं जान सके। उन्होंने कॉमरेड नितांत को निशाना बनाकर हमला कर दिया। जिससे कॉमरेड नितांत के शरीर में तीन गोलियां लगी एवं कॉमरेड रवीन्दर को भी गोली लगी। जिससे वह वहीं शहीद हो गए। वहाँ मौजूद सेक्शन के साथियों ने दुश्मनों से लोहा लेते हुए कॉमरेड नितांत को मुठभेड़ स्थल से बाहर निकाला, प्राथमिक उपचार के दौरान रक्तस्त्राव ज्यादा होने के चलते कॉमरेड नितांत भी शहीद हो गए।

कठिन डगर पर चला कॉमरेड शैलेन्द्र (नितांत) का सफरनामा

कामरेड शैलेन्द्र का जन्म 1984 में बिहार के गया जिला के अन्तर्गत कोठी थाना के भटविगहा गाँव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। माँ .....देवी और पिता स्वर्गीय .....सिंह की पाँच संतानों (चार बेटे व एक बेटी) में वे सबसे छोटे थे। इनका घर का नाम लवकुश था, सभी भाई बहन में थोड़े ज्यादा गोरे होने के चलते इनका पुकारू नाम गोरा भी था और सबसे छोटे होने के चलते प्यार से इन्हें बाबू कहकर भी पुकारते थे। इनके पिताजी दफेदारी की नौकरी करते थे, जिनका बीमारी के कारण बहुत पहले ही देहांत हो गया था जब कॉमरेड शैलेन्द्र काफी छोटे थे। पिता के मृत्यु के बाद अनुकंपा के आधार पर इनके बड़े भाई को दफेदारी की नौकरी मिली। कॉमरेड शैलेन्द्र की प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय स्कूल में हुई, पाँचवीं पास करने के बाद हाई स्कूल मैगरा में दाखिला ली जहां से माध्यमिक (मैट्रीक) की परीक्षा देकर रीजल्ट (परिक्षाफल) देखे बगैर बीच में ही आगे की पढ़ाई छोड़कर क्रान्तिकारी आन्दोलन में शामिल हो गए।

जुल्म-अत्याचार के बगीचे में प्रतिरोध व बगावत के फूल थे कॉमरेड शैलेन्द्र

बिहार (गया-औरंगाबाद) - झारखंड (चतरा-पलामू) के सीमांत क्षेत्र में स्थित डुमरिया, इमामगंज, कोठी, प्रतापपुर, छत्रपुर आदि इलाके को राजपूत व

पठान जाति के सामंतों का गढ़ कहा जाता था। तथाकथित आजादी के कई दशकों बाद तक कोठी इलाके में डोली रोको प्रथा चलता था, जिसे कभी अकबर ने शुरू किया था। जिस प्रथा में शादी कर लाई गई वधु की डोली को जमीन्दारों व सामंतों द्वारा रास्ते में रोक लिया जाता था और वधु को पहली रात जमीन्दार के साथ ही बिताना पड़ता था इसके बाद ही वह अपने पति के घर जा सकती थी। इस जुल्म-अत्याचार से कराहती धरती पर अस्सी के दशक में तत्कालीन एमसीसी के नेतृत्व में सामंतवाद विरोधी सशस्त्र किसान आन्दोलन का शुरूआत हुआ, जो नब्बे के दशक तक तीखा वर्ग संघर्ष का रूप ले लिया। जनता द्वारा सामंतों के सैंकड़ो कचहरियों को ध्वस्त कर दिया गया, उनके चल-अचल संपत्ति जब्त कर ली गयी। "जोतने वालों को जमीन व क्रान्तिकारी किसान कमेटियों के हाथों तमाम राजनीतिक हुकूमत" के नारों के बैनर तले हजारों किसान गोलबंद होकर लाखों एकड़ जमीनों पर अपना हुकूमत कायम करने लगे। सत्ता संरक्षित सामंतों के अन्याय के खिलाफ किसान जनता के उभरते इस न्यायोचित जन आन्दोलनों को कुचलने एवं अततई सामंती जुल्मो-सितम को बरकरार रखने के बुरे मंसूबों से बिहार के कई इलाकों में विभिन्न नामों से सामंतों द्वारा निजी सेनाओं का गठन होने लगा। उन्ही में से एक 'सनलाइट सेना' भी था। जिसके गठन का इतिहास सीधे तौर पर बिहार के तत्कालीन काँग्रेसी मुख्यमंत्री सत्येन्द्र नारायण सिंह द्वारा 1981-82 में गठित सत्येन्द्र सेना से जुड़ा हुआ है। सत्येन्द्र सेना से सनलाइट सेना बनने के बाद उसका मुख्यालय कोठी को बनाया गया था। और सनलाइट सेना के संस्थापकों में प्रमुख विजय बहादुर सिंह (छतरपुर) था, जो पांडीचेरी के तत्कालीन राज्यपाल भीष्म नारायण सिंह का भाई था। इस तरह से मुख्यमंत्री और राज्यपाल से जुड़ा इतिहास ही साबित कर दिया था कि जमीन्दारों के नेतृत्व में गठित निजी सेनाएं सत्ता के सुनियोजित योजना से निर्मित व संरक्षित थे। सनलाइट सेना के बर्बर जुल्म-अत्याचार किसानों की हत्या, घरों को जलाना, लूटपाट, महिलाओं के साथ छेड़छाड़ व सामूहिक बलात्कार आदि रूपों में ढाये जाने लगा। इस मध्ययुगीन बर्बरता का शिकार कोठी, इमामगंज, डुमरिया आदि क्षेत्र के दर्जनों गांवों के किसान परिवारों को बनाया गया। इसमें तीन डीहवा जैसे नरसंहार रोंगटे खड़ा कर देती है। जहां सनलाइट द्वारा महिलाओं, बच्चों सहित सात किसानों की सामूहिक हत्या करके घरों को जलाकर राख कर दिया गया था। कॉमरेड शैलेन्द्र के गावं भटविगहा भी सनलाइट का अड्डा हुआ करता था। जहां के राजपूत जाति के जगरनाथ सिंह,

प्रदूमन सिंह, अरूण सिंह, बदरी सिंह आदि सनलाइट सेना के सरगना थे। इनमें अरूण सिंह व जगरनाथ सिंह मुख्य भूमिका अदा करने वाले थे। इन्हीं लोगों द्वारा कॉमरेड शैलेन्द्र की दादी को बुरी तरह पिटाई किया गया था, जिसके चलते कुछ ही दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई थी। वही अरूण सिंह और जगरनाथ सिंह के निर्देश पर बदरी सिंह एवं अन्य सनलाइट के गुंडों द्वारा कॉमरेड शैलेन्द्र के मंझले भाई अमरेन्द्र सिंह का मैगरा से भटविगहा अपने घर आने के दौरान डेरावना नदी के पास पकड़कर चाकू गोदकर निर्ममतापूर्वक हत्या किया गया था। उस दिन वे एयर फोर्स की नौकरी का अपना ज्वाइनिंग लेटर लेकर आ रहे थे। पिटाई से हुई दादी की मृत्यु एवं भाई की नृशंस हत्या ने कॉमरेड शैलेन्द्र के किशोर मन को सामंती अत्याचार और जुल्मी व्यवस्था के प्रति घृणा से भर दिया। उन्होंने इन सब घटनाओं को बर्दास्त नहीं कर सके और निकल पड़े एक ऐसे विकल्प की खोज में जिससे इन अतताइयों व जुल्मी व्यवस्था से मुक्ति मिले और आने वाले दिनों में किसी की घर की चिराग न बूझे। इस विकल्प की तलाश में उन्हें ज्यादा समय नहीं लगा क्योंकि ये वही इलाका है जहां सामंतवाद के खिलाफ क्रान्तिकारी संघर्ष की आग दशकों से धधक रही थी। अत्याचारियों के खिलाफ इनके दिल में उत्पन्न तीव्र घृणा के कारण वे बिना समय गवांये जारी वर्ग संघर्ष में कूद पड़े, जुल्म-अत्याचार को खत्म कर एक शोषणविहीन-अत्याचारविहीन समाज की रचना के लिए। दुनिया जानती है कि जुल्म अत्याचार के बगीचे में ही प्रतिरोध व बगावत के फूल खिलते हैं और कामरेड शैलेन्द्र भी वही फूल थे।

क्रान्तिकारी पथ पर कॉमरेड शैलेन्द्र का बढ़ता कदम

कॉमरेड शैलेन्द्र वर्ष 2000 में अपनी पढ़ाई छोड़कर पार्टी में शामिल हुए थे। शामिल होने के बाद लोकल छापामार दस्ता के साथ जुड़कर काम करने लगे। माँ की ममता व बहन-भाइयों के प्यार के पलकों में पले-बढ़ें का. शैलेनद्र सोलह साल की तरूणाइ उम्र में, पतला-दुबला, कोमल, सुकुमार, गोरा बदन लिए कटिला, पत्थरिला जंगलों में रात-दिन चलना, किटकिटाती जाड़ों, चिलचिलाती धूपों, झमझमाती बरसातों सहित प्रकृति की तमाम विपरीत परिस्थितियों का सामना करना कल्पना करने से ही काफी कठिन जान पड़ता है। पर, उनके अंदर की तेजस्विता और वर्ग दुश्मनों के प्रति धधकती ज्वाला ने पार्टी कार्यों के प्रति इतना जंजावात भर दिया था कि सब मुश्किलों का सामना हंस कर करते थे।

उन्हें सैनिक कला और राजनीतिक ज्ञान ग्रहण करने में काफी दिलचस्पी रहती थी। पुराने साथियों से सीखने व अनपढ़ साथियों को पढ़ाने-लिखाने में खूब मन लगाते थे। इन सब सकारात्मक गुणों के साथ-साथ सैनिक कार्रवाईयों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के चलते बहुत कम समय में सबके प्रिय बन गए। और कुछ ही समय बाद प्लाटून में शामिल कर लिए गए। सन् 2002 में पहली बार तत्कालीन एमसीसी के नेतृत्व में 81 सदस्यीय कंपनी का गठन हुआ था, जिस फॉर्मेशन में इन्हें शामिल कर सेक्शन कमांडर की जिम्मेवारी दी गई थी। इन्होंने अपनी जिम्मेवारी को बखूबी निभाते हुए एक कुशल कमांडर के रूप में उभरे। कई सैनिक कार्रवाईयों में अपने सेक्शन का सफल संचालन कर उस कंपनी में आदर्श प्रस्तुत किए। जिसमें खुंखार प्रतिक्रियावादी व सनलाइट का सरगना अरूण सिंह (भटविगहा), बच्चू सिंह, प्रमोद पांडे का सफाया की कार्रवाई भी है। कुछ ही दिन बाद यानी 2003 में कुछ कारणवश कंपनी को तोड़कर अलग-अलग प्लाटूनों में बांट दिया गया। जिसमें एक प्लाटून 27 नं. के रूप में गठन हुआ, इस प्लाटून का डिप्युटी कमांडर के रूप में कॉमरेंड शैलेन्द्र को नियुक्त किया गया। 2003 से 2005 के दौरान बीआरसी के मध्य जोन की करीब-करीब सभी कार्रवाईयों में अपने प्लाटून के साथ शामिल रहे तथा कुछ कार्रवाईयों में मुख्य कमांडर के तौर पर भी जिम्मा निभाया। औरंगाबाद जिला के सिमरा थाना का सफल रेड, प्रतिक्रियावादी पूर्व सांसद राजेश कुमार का सफाया, फरवरी 2005 के बिहार विधानसभा चुनाव के दरम्यान इमामगंज के दिघासीन बूथ पर हमला कर दो पुलिस का सफाया व तीन राइफल जब्त, झारखंड के भ्रष्टाचारी कैबिनेट मंत्री कमलेश सिंह के जपला थाना अन्तर्गत कामगारपुर स्थित घर ध्वस्त कर चल-अचल संपत्ति जब्त करना, डुमरिया थाना का असफल रेड जिसमें कॉमरेड परमजीत शहीद हुए थे। इसमें कॉमरेड शैलेन्द्र हमलावर टीम के कमांडर की भूमिका में थे। चतरा के सतबहिनी ऐम्बुश सहित दर्जनों छोटे-बड़े कार्रवाईयों में इनकी भूमिका काफी उल्लेखनीय रही है।

प्लाटून का सैनिक कार्रवाईयों में सुचारू संचालन के साथ-साथ राजनीतिक तौर पर संचालन में भी एक आदर्श कमांडर के रूप में उभरे। इनकी इस कार्यक्षमता के चलते प्लाटून कमिस्सार व कमांडर की अनुपस्थिति में भी शैलेन्द्र की नेतृत्व में प्लाटून सुव्यवस्थित तरीके से ही कार्य करता था। फॉर्मेशनों के संचालन में उन्होंने कभी भी नौकरशाही जैसे गैर सर्वहारा रूझानों का शिकार नहीं हुए और कदम दर कदम हर क्षेत्र में अपनी क्षमता को बढ़ाते रहे।

केन्द्रीय प्रशिक्षक दल (Central instructor team) के सदस्य के रूप में कॉमरेड शैलेन्द्र

प्लाटून में शामिल होने के साथ ही इनके अन्दर पीटी, परेड में काफी दिलचस्पी दिखने लगा। जब भी कहीं प्रशिक्षण कैंप का आयोजन होता तो 27 नम्बर प्लाटून से कॉमरेड शैलेन्द्र का नाम सबसे पहले दर्ज किया जाता। उन्होंने इस मौके को थोड़ा भी व्यर्थ न जाने दिया और अपने आप को सैनिक प्रशिक्षण के मामले में उसके प्रैक्टिश (व्यवहार) के साथ-साथ थियोरी (सिद्धांत) को भी इतना मजबूती के साथ पकड़ा कि कम ही समय में उन्हें प्रशिक्षक की जिम्मेवारियां दी जाने लगी। सब जोन व जोन स्तर पर कई प्राथमिक सैन्य प्रशिक्षणों में कॉमरेड शैलेन्द्र की अहम भूमिका रही। सन् 2004 के सितंबर-अक्टूबर में पुरानी पार्टी के बिहार-झारखंड-उत्तरी छत्तीसगढ़-उत्तर प्रदेश सीमांत रीजनल मिलिटरी कमिसन के नेतृत्व में आयोजित एक ऐतिहासिक प्रशिक्षण शिविर में भी कॉमरेड शैलेन्द्र का योगदान काफी उल्लेखनीय रहा। जिसमें उक्त क्षेत्र के कई सैक व आरसी सदस्य समेत जोन, सब जोन, एरिया सदस्यों, प्लाटून कमांडर, डिप्यूटी कमांडर, सेक्शन कमांडर सहित सैकड़ों पीएलजीए के लड़ाकुओं को विस्तृत सैन्य प्रशिक्षण दिया गया था। वहां प्रशिक्षत कामरेड्स आज विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्तिकारी आन्दोलन को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं। यह प्रशिक्षण शिविर इस मायने में ऐतिहासिक रहा कि जिस 31 सितंबर 2004 को नई पार्टी भाकपा (माओवादी) का उदय हुआ, उसी दिन उसका सुभारंभ हुआ और जिस 15 अक्टूबर 2004 को नवगठित पार्टी के बारे में मीडिया सहित अन्य माध्यमों से दुनिया में घोषणा की गयी उसी दिन उस प्रशिक्षण शिविर की समाप्ति की गई थी। जिसके प्रशिक्षक दल के मुख्य सदस्य के रूप में थे कॉमरेड शैलेन्द्र। सैनिक कलाओं के व्यावहारिक व सैद्धांतिक क्षेत्रों में बढ़ते दक्षता को देखकर नवगठित पार्टी भाकपा (माओवादी) की केन्द्रीय सैन्य आयोग (सीएमसी) द्वारा केन्द्रीय प्रशिक्षक टीम के सदस्य के रूप में चयन कर लिए गए। नवगठित पार्टी की सैन्य प्रशिक्षक टीमों की पहली प्रशिक्षण में ही कॉमरेड शैलेन्द्र को भाग लेने का अवसर मिला। जिसके लिए उन्हें दण्डकारण्य भेजा गया। वहां भी उन्हें सीखने के क्षेत्रों में सराहनीय माना गया। इन्स्ट्रक्टरों के प्रशिक्षण के बाद सीएमसी के निर्णय के मुताबिक उत्तरी रीजनल ब्यूरो व पूर्वी रीजनल ब्यूरो के अधिनस्थ सैक, आरसी व जोनल स्तर पर कई प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर सैंकड़ों कॉमरेडों को युद्ध कला से प्रशिक्षित किया गया। जिसमें पीएलजीए के लड़ाकूओं

के अलावा पार्टी के कामरेड भी भाग लिए थे। इस दौरान जहां-जहां भी गए वहां के सैनिक कार्रवाईयों में भी कमांडर की भूमिका अदा कर साथियों के दिल पर अमिट छाप छोड़े। 23 जून 2005 को थ्री यू सैक क्षेत्र अधीनस्थ उत्तर बिहार के ऐतिहासिक मधुबन का बहुविध रेड और रेड के बाद विशाल समतल क्षेत्र में तीन दिनों तक चले भीषण मुठभेड़ का नेतृत्व कर मुकाबला करते हुए सैकड़ों साथियों को सुरक्षित निकालने वाले कमांडरों में कॉमरेड शैलेन्द्र का भी योगदान काफी उल्लेखनीय रहा था। 2007 में रोहतास जिला के राजपुर व बघेला थाना रेड कर लौट रहे साथियों को औरंगाबाद के पश्चिमोत्तर के समतल इलाके में दुश्मन द्वारा घेरकर मुठभेड़ शुरू कर दिया गया था उस समय कॉमरेड शैलेन्द्र मध्य जोन के बिहार पाट में थे। यह खबर सुनकर उपस्थित साथियों के सलाह पर एक प्लाटून को लेकर अपने नेतृत्व में औरंगाबाद के पूरब दिशा में स्थिति मदनपुर सीआरपीएफ कैंप पर हमला कर दुश्मन का ध्यान विकेन्द्रित कर मुठभेड़ स्थल से साथियों को निकालने में सहुलियत प्रदान किया। इस तरह कम उम्र में ही अपने को कुशल प्रशिक्षक के साथ-साथ एक दक्ष कमांडर के रूप में भी उन्होंने प्रस्तुत किया। ट्रेनिंग फिल्ड में साधारण व्यायाम, आत्मरक्षा व आक्रमण के लिए उपयुक्त प्राथमिक पोजिशन, हथियारों से संबंधित जानकारी, बैटल क्राप्ट, फिल्ट क्राप्ट, नाइट मुवमेंट, बाधक कूद, निशानेबाजी, फायर एंड मुवमेंट, अरबन कम्बैक्ट आदि विषयों को साथियों को समझने या करने में समस्याएं उत्पन्न होती तो हंसते हुए बार-बार समझाते व खुद करके बताते। कोई साथी समूह में नहीं समझ पाने पर उन्हें अकेले में भी समझाते तथा क्लास लेते समय भी सरल से सरल शब्दों में शालिनता के साथ तब तक समझाते जब तक साथियों को समझ में न आ जाए। प्रशिक्षण के क्षेत्र में उनकी यह खास विशिष्टता थी। कॉमरेड शैलेन्द्र (नितांत/सूरज/साकेत) की शहादत से हमने एक कुशल सैन्य प्रशिक्षक को खो दिया।

फौलादी संकल्प के सामने दुश्मन की बर्बर यातनाएं परास्त

अपने इलाज के दौरान पटना के एक अस्पताल से 21 अगस्त 2007 को एक अन्य समर्थक साथी के साथ कामरेड शैलेन्द्र स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। छः दिनों तक गोपनीय रखकर एसटीएफ व आइबी द्वारा अमानवीय तरीके से शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता रहा। इस दौरान चेहरे पर लगातार पानी की फूहारा मारना, कमर में रस्सी बांध

कर सोन नदी में धकेलना निकालना फिर धकेल देना, सिर में करंट का झटका लगाना, मिर्च की गुंडी खिलाकर पानी नहीं देना, डंडों से शरीर पर प्रहार करना, दिन-रात जगाए रखना, हत्या करने की धमकियां देना....इत्यादि बर्बर यातनाओं के बावजूद कॉमरेड नितांत पार्टी की गोपनीयता को पूरी तरह अक्षुण्य बनाये रखा। जबकि वह हेडक्वाटर से निकलकर गए थे, जहां कई महत्वपूर्ण नेतृत्व मौजूद थे तथा लौटकर आने का डेट भी एक वरिष्ठ नेतृत्व से ही था। इसे एक वाक्य में कहें तो "अगर कामरेड नितांत दुश्मन के सामने मुंह खोल देते तो पार्टी को भारी क्षति उठानी पड़ती।" क्योंकि गिरफ्तारी के तीन दिन बाद तक हम लोगों ने यह नहीं समझ पाए थे कि वे दुश्मन के कब्जे में है। दरअसल दुश्मन उन्हें झूठा मुठभेड़ दिखाकर या गुप्त हत्या करने की मंसा से गुप्त रखा था। कुछ दिन तक टॉर्चर कर गोपनीयता उगलवाकर मुठभेड़ की कहानी रचेंगे। लेकिन डेट पर लौटकर न आने के कारण साथियों को समझते देर नहीं लगी और गिरफ्तारी की खबर मीडिया सहित हर जगह फैल गई। इसलिए उन्हें पुलिस मार नहीं सकी। इस तरह 27 अगस्त 2007 को औरंगाबाद जेल में उन्हें भेजा गया। जेल में भी इन्होंने जेल कमेटी से जुड़कर पार्टी के जेल कम्यून के आधार पर हर आन्दोलनों में भाग लेते रहे। जेल में भी शासक वर्ग इनसे काफी आतंकित था और बार-बार जेल स्थानांतरित करता रहा। 9 महीनों के जेल जीवन में इन्हें चार जेलों (बिहार के औरंगाबाद, शेरघाटी, गया और झारखंड के चतरा) में रखा। केन्द्रीय कारावास गया में 25 दिन तक अंडा सेल में रखकर अन्य कैदियों व मुलाकतियों से मिलने पर रोक तक लगा दिया। इतना सब कुछ करने के बावजूद भी जहां जिस रूप में रहे वहां राजनीतिक बंदी या आम बंदियों के न्यायोचित आन्दोलनों में मुस्तैदी के साथ डटे रहे। जेल में भी बंदी साथियों व समर्थकों के साथ घनिष्ठ व्यावहारिक संबंध बनाकर सबके प्रिय बने रहे। यहां यह भी जिक्र करना जरूरी है कि इमामगंज क्षेत्र के कुछ लोग अपने जमीन के गोतियाई लड़ाई के चलते केस में फंसकर जेल में बंद थे जिनसे इतना गहरा संबंध हो गया कि उन लोगों ने कॉमरेड नितांत के साथ अपनी बहन के शादी का प्रस्ताव रख दिया। जेल से निकलने के बाद शादी से संबंधित प्रस्ताव पार्टी के नेतृत्व कॉमरेडों के पास तक आया, जिस पर सबके सहमति से 15 जून 2009 को उनकी शादी एक गरीब किसान की बेटी का. सुलेखा के साथ हुई। शादी के बाद दाम्पत्य जीवन की शुरूआत ही हुई थी कि का. नितांत के शहादत के साथ ही एक दु:खद अंत हो गया।

परिपक्व नेतृत्व के रूप में उभरता लाल सितारा

2009 में का. नितांत को केन्द्रीय प्रशिक्षक के काम से मुक्त कर मध्य जोनल कमेटी में शामिल कर जोनल कमांड के इंचार्ज की जिम्मेवारी सौंपी गयी थी। कामरेड शैलेन्द्र ने जोनल कमांड को लड़ाई के क्षेत्र में एक सकारात्मक दिशा देकर उन्होंने कई महत्वपूर्ण सैनिक कार्रवाइयों को योजनाबद्ध तरीके से सफल कर दुश्मन के दातों तले लोहे का चना चबवा दिया। जेल से आने के बाद उन्होंने दुगुनी उत्साह के साथ सैनिक कार्रवाईयों में हिस्सा लेने व दुश्मनों का सफाया करने में लगे रहे और दुश्मन को चुनौती पेश करके सबक सिखाते रहे। केन्द्र व राज्य सरकारों के समन्वय पर संचालित ऑपरेशन ग्रीन हंट नामक दमन अभियान का मुकाबला करने कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान (टीसीओसी) में 23 मार्च 2010 को बिहार के गया जिला आमस के टोल प्लाजा पर रेड कर 17 हथियार जब्त व दो दुश्मनों का सफाया, 2 अप्रैल 2010 के रात्रि में बांकेबजार के लुटुआ आश्रम में स्थित कोबरा के बेस कैंप (तीन कंपनी कोबरा) पर हमला कर भागने पर मजबूर करना, 1 जून 2010 को औरंगाबाद के टंडवा बैंक की सुरक्षा में लगे पुलिस पर रेड कर चार पुलिस का सफाया व 5 हथियार जब्त करना आदि कार्रवाईयों में मुख्य कमांडर की भूमिका अदा किए। इन कार्रवाईयों के कुछ दिन पहले यानी अपने गिरफ्तारी के ठीक पहली वर्षी पर 21 अगस्त 2008 को गया जिला के इमामगंज थाना अन्तर्गत रानीगंज बैंक पर शॉट सरप्राइज अटैक कर एक एसआई सहित 6 सिपाहियों का सफाया व 5 हथियार जब्त कर दुश्मन के सामने चुनौती पेश किए। इस हमले के दौरान का. शिबू शहीद हो गए थे। इसके बाद पीछा कर रहे दुश्मनों को 25 अगस्त 2008 को इमामगंज थाना के पथलौटिया गांव के बगल में मौकापरस्त ऐम्बुश कर 6 सीआरपीएफ का सफाया, 10 को घायल कर दो हथियार जब्त कर दुश्मन को उल्टे पांव भागने पर मजबूर कर दिया। इस कार्रवाई में भी हमारा एक बहादुर साथी का. लाहौर शहीद हुए थे। का. नितांत के ही नेतृत्व में 2009 के लोकसभा चुनाव में बांकेबाजार के सिंहपुर बुथ पर रेड कर 3 पुलिस का सफाया कर 4 राइफल जब्त किया गया था इत्यादि। उनकी इस नेतृत्वकारी क्षमता के चलते उस समय भी ऑपरेशन कमांड के इंचार्ज व विशेष अभियानों में कंपनी कमांडर की जिम्मेवारियां दी जाती थी, जबकि वे सीधे तौर पर जोनल कमेटी में न रहकर सीआइटी में कार्यरत थे। इस दौरान भी इन्होंने 2006 के दिसम्बर से मार्च 2007

तक पूरे मध्य जोन के चुनिन्दे साथियों को लेकर गठित अस्थायी कंपनी में कमांडर की भूमिका अदा की। खासकर सरकार पोषित प्रतिक्रान्तिकारी गुंडा गिरोह टीपीसी के खिलाफ राजनीतिक व सैनिक दोनों मोर्चों में का. नितांत के नेतृत्व में चलाये गये अभियान अभुतपूर्व व ऐतिहासिक रहा है।

फरवरी 2010 में सम्पन्न मध्य जोन के द्वितीय प्लेनम के बाद भी जोनल कमांड का जिम्मा दिया गया। मध्य जोन के इस द्वितीय प्लेनम के राजनीतिक-सांगठनिक प्रतिवेदन (पीओआर) लिखने में भी का. नितांत का काफी योगदान रहा। सैनिक कार्रवाईयों के साथ-साथ लेखनी के मामले में भी वे अपनी कमेटी में अग्रिम पंक्ति के साथी थे। जुलाई 2010 में बीआरसी के द्वितीय प्लेनम में इन्हें पदोन्नति कर आरसी में शामिल किया गया व आरएमसी इंचार्ज की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी दी गई। वर्ग दुश्मनों के प्रति नफरत की प्रचंड ज्वाला इतना तेज था कि बीआरसी प्लेनम से लौटने के साथ ही प्रतिक्रान्तिकारियों के खिलाफ क्रान्तिकारी अभियान जारी कर दिए तथा एक बार फिर अस्थायी कंपनी के कमिस्सार व कमांडर की भूमिका अदा कर रहे थे। जिस अभियान में भी उन्होंने टीपीसी के कथित गढ़ में स्थित उसके सुप्रिमो के दोनों अलिशान बिल्डिंगों को ध्वस्त कर दो सरगनाओं का सफाया जैसे उल्लेखनीय कार्रवाइयों को नेतृत्व प्रदान किए थे। आखिरी तक वर्ग दोस्तों के हित में उनकी प्रतिबद्धता मिसाल बनकर ही झलकता रहा। जो कि बनवार के गरीब किसानों की जान-माल की रक्षा के लिए अपनी कुर्बानी तक दे डाले। हमेशा कार्रवाईयों में असाधारण व जोखिम भरे कामों को खुद करने की अदम्य साहस संघर्ष के पूरे जीवनकाल में बना रहा। इस तरह का. नितांत जब से वर्ग संघर्ष में शामिल हुए तब से कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

आंतरिक संकट में भी पार्टी के पक्ष में दृढ़ता से खड़े रहे

पार्टी में उत्पन्न आंतरिक संकटों के समय का. नितांत क्रान्तिकारी खेमे में मजबूती के साथ खड़े रहे। हर किस्म के अवसरवादियों का उन्होंने दृढ़ता से विरोध किया। सन् 2000 में पार्टी में शामिल होने के समय ही भरत-बादल गुट का पार्टी से गद्दारी जैसी घटनाएं घट चुकी थी। इसी से जुड़ा हुआ कड़ी टीपीसी को जन्म दिया। जिसकी अगली कड़ी के रूप में 2004-05 में मुरारी-अमित सहित बीआरसी के मध्य जोन से कई कार्यकर्ता पार्टी से गद्दारी कर हथियार व रुपया लेकर प्रति-क्रान्तिकारी गुंडा गिरोह टीपीसी से जा मिले। इस समस्या से

पार्टी के सामने दोनों मोर्चों पर चुनौती खड़ा हो गया। और स्थिति ऐसी बन गई कि हर कार्यकर्ता एक-दूसरे को संदेह की निगाह से देखने लगा। कब कौन किस पक्ष में चला जायेगा यह आंकलन कर पाना मुश्किल हो गया था। जिसके चलते कई साथी घर भी लौट गए। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी का. नितांत पार्टी में रहकर भीतरी व बाहरी दोनों मोर्चों पर संघर्ष करने में पार्टी को सहयोग दिया। खासकर सैनिक फारमेशनों के बीच सही और गलत को रेखांकित कर गुटीय मानसिकता से ऊपर उठकर गुटबाजी के खिलाफ संघर्ष करने का साहस भरते रहे तथा बाहरी मोर्चों पर गद्दार लोगों के खिलाफ जोरदार संघर्ष चलाने में अग्रमी पंक्ति में रहकर पार्टी को बचाने में योगदान दिया। भरत-मुरारी-अमित-अमरेश-ब्रजेश-मुकेश आदि अवसरवादियों ने पुलिस ऑफिसरों एवं प्रतिक्रियावादी वोटबाज नेताओं से गठजोड़ कर टीपीसी, एसपीएम नामक प्रतिक्रान्तिकारी गुंडा गिरोहों को खड़ा कर पार्टी को जड़ से खत्म करने का दुस्वप्न देखने लगे तथा पुलिस के बी टीम के रूप में काम करने लगे। हर वो काम करने लगे जिसे कल तक पुलिस या जमीन्दारों द्वार गठित निजी सेनाओं द्वारा किया जाता था। इस कुकर्म में टीपीसी सबसे आगे निकल गया। इसी टीपीसी के खिलाफ लोहा लेते हुए का. नितांत एवं का. रवीन्दर वीरगति को प्राप्त किए।

का. नितांत के क्रन्तिकारी आदर्श हमें सदा प्रेरणा देते रहेगें

पार्टी, पीएलजीए और जनता के बीच का. नितांत एक लोकप्रिय व आत्मीय साथी थे, जो हमेशा जमीन से जुड़े रहे। वह एक निराले नेतृत्व थे जो नीचले स्तर के कामरेडों से भी बेहद आसानी से घुलमिल जाते थे। शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोर साथियों के अन्दर भी क्रान्तिकारी जोश व उमंग भर देते थे कि इनके नेतृत्व में हर ताकतवार दुश्मन से लोहा लेने के लिए कतारबद्ध हो जाते थे। घमंड, अहम, झूठी प्रतिष्ठा, नौकरशाही जैसे गैर सर्वहारा रूझानों से हमेशा सावधान रहे। वह जहां भी गए वहां के पार्टी कार्यकर्ताओं व जनता ने उन्हें बेहद पसंद किया। हर उम्र के कामरेडों से वह आसानी से जुड़ जाते थे। खेल में खासा रुचि रखने वाले कॉ. नितांत को नौजवानों के दिलों में गहरी जगह बनाते देर नहीं लगती थी। साथियों के व्यक्तिगत समस्याओं और सुख-दुःख से लेकर उनके राजनीतिक, फौजी और सांगठनिक विचारों को सुनना, समझना और उन्हें आवश्यक सुझाव देना, उनके हौसलों को बढ़ाना आदि कामरेड नितांत के सहज

गुण थे। यही वजह है कि कामरेड नितांत को एक बार देखने वाले साथी भी उन्हें हमेशा याद करते हैं। वह एक योद्धा कमांडर के साथ-साथ कुशल संगठनकर्ता भी थे। धैर्य व सहनशीलता के धनी का. नितांत अपने 10 साल के क्रान्तिकारी जीवन में कई प्रकार के काम किए। एक पीएलजीए सदस्य के रूप में, सेक्शन, प्लाटून व कंपनी कमांडर के रूप में, सैन्य प्रशिक्षक के रूप में, जोनल कमांड व आरएमसी इंचार्ज के रूप में.....पार्टी ने जो भी जिम्मेवारी दी उसे स्वीकार किया और उसे पूरा करने के लिए कठोर परिश्रम किया। पार्टी में वह एक भरोसेमंद व जुझारू कामरेड थे। चेहरे पर अमिट मुस्कान, नम्र स्वभाव और मिठे बोल उनके ये खास गुण थे। सरल जीवन, उच्च विचार वाले कामरेड नितांत हमारे लिए सदा प्रेरणादायी बने रहेंगे।

मौत के सामने भी लाल पताका को ऊंचा उठाये रखा

दुश्मन के लिए का. नितांत हमेशा एक कठिन चुनौती बनकर रहे। 2007 में वह जब गिरफ्तार किए गये थे उस समय भी दुश्मन की क्रूर अमानवीय यातनाओं के बावजूद पार्टी की गोपनीयता को पूरी तरह अक्षुण्य बनाये रखा। और 29 अगस्त 2010 को भी मुठभेड़ के दौरान गोली लगने से दोनों पैर टूट चुके थे पर जीवन की आखिरी सांस तक हौसला न टूटा। गले में लटकाये वॉकी-टॉकी से कंपनी के सभी साथियों को रिट्रीट का काशन दिए। उनकी हालात देखकर सभी साथियों में शोक की लहर उमड़ पड़ा, माहौल काफी गमगीन हो गया, आंसुओं की वर्षा छलकने लगी। का. नितांत उस पल भी साथियों को ढंढास बंधाते रहे, "साथियों आप लोग क्यों रोते हैं शहादत की परम्परा है। मैं शहीद हो रहा हूं इस परम्परा को जारी रखने के लिए। मैं जुल्म-अत्याचार के खिलाफ अन्यायपूर्ण समाज के खिलाफ एक न्यायप्रिय समाज निर्माण के लिए लड़ते हुए शहीद हो रहा हूं। हम शोषित-पीड़ित जनता की मुक्ति युद्ध में इतने ही दिनों तक शामिल रह सके, अब मैं आप सबों से सदा-सदा के लिए विदा ले रहा हूं। क्रान्ति का शेष जिम्मा आप लोगों के कंधे पर छोड़कर जा रहा हूं। इसे बढ़ाते रहना।'' जीवन के अंतिम क्षण में क्रान्ति की इन्हीं शब्दों को साथियों के बीच बिखेरते हुए सबका हालचाल पूछकर ''लाल सलाम'' कहते हुए अंतिम सांस लिया। का. नितांत को पार्टी और जनता पर पूरा विश्वास था। जब मौत उनके सामने आकर खड़ी थी तब भी उनका यह विश्वास जरा भी कमजोर नहीं हुआ था कि हम सब मिलकर उनके अधूरे कार्यों को कामयाबी की मंजिल तक

पहुंचाकर ही रहेंगे। उनके द्वारा बहाये खून के एक-एक कतरा का जनता दुश्मन से जरूर हिसाब चुकायेगी। इस दृढ़ और अटूट प्रतिबद्धता के चलते उन्होंने जीवन के आखिरी पल तक क्रान्तिकारी युद्ध का संचालन किया और मौत के सामने भी लाल पताका को ऊपर उठाये रखा। नक्सलबाड़ी से अब तक 14 हजार से ज्यादा महान शहीदों ने कुर्बानी की जिस गौरवशाली परंपरा को रौशन किया था उसका गौरव का. नितांत ने और भी बढ़ाया। आज का. नितांत हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उन्होंने जो आदर्श हमारे सामने पेश किए हैं, जो प्रेरणा हमें दिए, जिस तरह खुद को एक उदाहरण के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किए उसे हम कभी नहीं भूल पायेंगे।

का. नितांत की शहादत पर बिहार-झारखंड की मेहनतकश जनता में, तमाम गुरिल्ला जोनों और पार्टी पीएलजीए के कतारों में शोक की लहर दौड़ गयी, बहुत से घरों में चूल्हे नहीं जले। उनकी अंतिम विदाई के समय उपस्थित सैंकड़ों साथियों ने उन्हें पुष्प अर्पित कर यह शपथ लिया, कि अमर शहीद का. नितांत हम अपने आंसुओं को अंगार में बदलकर रहेंगे, आपके अधूरे सपनों को साकार करने के लिए हम कुर्बानी की इस परम्परा को जारी रखेंगे। और एके 47 से फायरिंग कर उनको सलामी दी गई। उस समय साथियों के अन्दर जो भावविहीलता थी, मर्माहतता था और दुश्मनों के प्रति आक्रोश भी यह वर्णन करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। जगह-जगह पर शोक सभाओं का आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गयी। कोयल-शंख जोनल कमेटी द्वारा उनके याद में "अमर शहीद का. नितांत बमचक्र परियोजना" नामक विस्फोटक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन सभी से यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि उनके दिलों में का. नितांत की जगह कितनी खास है। आज दुश्मन का. नितांत की शहादत पर भले ही जश्न मना रहा हो लेकिन ऐसी सैंकड़ों हजारों माताओं-बहनों, भाइयों के सीने में इससे आग लगी है उसको सोला में बदलना और इस शोषक-शासक व्यवस्था व इसके पोषित प्रतिक्रान्तिकारी गुंडा गिरोहों को पूरी तरह से जलाकर राख करना अवश्यमभावी है।

पीएलजीए का समर्पित योद्धा का. रवीन्दर मेहता

21 वर्षीय का. रवीन्दर का जन्म .... 1988 को बिहार के औरंगाबाद जिला के टंडवा थाना अन्तर्गत महुअरी गांव के एक मध्यम वर्गीय किसान परिवार में हुआ था। माता .... देवी एवं पिता ..... मेहता के .... संतानों में ये

..... स्थान पर थे। इन्होंने सातवीं तक पढ़ाई कर खेती-गृहस्थी के काम में लग गये थे। गोरा, लम्बा, साधारण शरीर, हंसमुख मिजाज व चंचल स्वाभाव के साथी थे। इनका घर औरंगाबाद के उस इलाके में पड़ता है जहां राजपूत जाति के सामंतों द्वारा घोषित कथित चितौरगढ़ के नाम से जाना जाता है। जहां राजपूत जाति के एक से बढ़कर एक सामंतों का स्थायी निवास था व आज भी है। इन सामंतों द्वारा भी शोषण का एक लम्बा इतिहास रहा है। औरंगाबाद एवं झारखंड के पलामू के सीमांत क्षेत्र में सामंतवाद के खिलाफ सशस्त्र जन प्रतिरोध का भी लम्बा इतिहास (अस्सी के दशक से लेकर अभी तक) रहा है। जो अलग-अलग पार्टियों यानी एमसीसी एवं सीपीआई (एमएल) (पीडब्ल्यू) के नेतृत्व से लेकर नवगठित पार्टी भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में जारी है। सामंती शोषण का शिकार का. रवीन्दर का गांव-परिवार भी था। जिससे मुक्ति हेतु जारी क्रान्तिकारी संघर्ष से प्रभावित होकर का. रवीन्दर स्थानीय स्तर पर बचपन से ही जुड़े रहे। गांव में जाने पर साथियों को खाना खिलाना, क्रान्तिकारी गीत सीखना तथा उनके गांव से कुच करने पर कुछ दूरी तक छोड़ने जाया करते थे। क्रान्तिकारी साथियों से मिलते-मिलते इनके अन्दर परिपक्वता बढ़ता गया और उम्र के साथ-साथ वर्ग घृणा भी बढ़ता गया। इसी तरह फरवरी 2010 में इन्होंने पेशेवर बनकर काम करने का मन बना लिया। और एलजीएस के नेतृत्व कामरेड के साथ चलने का प्रस्ताव रखा। पुराने पहचान के चलते वे कामरेड बिना हिचकिचाहट के इन्हें एलजीएस में शामिल कर लिया। तीन महीना एलजीएस में रहने के बाद इनके अन्दर कामकाज में बढ़ते सक्रियता व चंचलता को देखते हुए 29 नम्बर प्लाटून में शामिल कर लिया गया। प्लाटून में शामिल होने के बाद और लगन से पढ़ाई-लिखाई करने, पीटी-परेड सीखने व सैनिक कार्रवाई में हिस्सा लेने के लिए उत्सुक रहने लगे।

प्रतिक्रान्तिकारी गुंडा गिरोह टीपीसी के खिलाफ प्रत्याक्रमण अभियान के लिए 14 अगस्त 2010 को गठित अस्थायी कंपनी में 29 नम्बर प्लाटून को भी शामिल किया गया, जिसमें का. रवीन्दर भी थे। जिस कंपनी में जीवन की आखिरी सांस तक वफादारी के साथ दुश्मनों के खिलाफ लड़ते हुए का. रवीन्दर अपनी शहादत वरण किए। अपने कंपनी कमिसार व कमांडर का. नितांत के साथ अंतिम समय तक युद्ध में लड़ते हुए शहीद होकर पीएलजीए का एक आदर्श योद्धा के रूप में प्रस्तुत किए। का. रवीन्दर के शहादत का इतिहास का. नितांत के साथ सदा के लिए अटूट रूप से जुड़ गया।

प्यारी जनता व साथियो,

अर्द्ध सामंती-अर्द्ध औपनिवेशिक भारत में सशस्त्र क्रान्तिकारी किसान आन्दोलन के विकास क्रम से घबराकर प्रतिक्रियावादी भारतीय शासक वर्गों ने साम्राज्यवादी आकाओं के निर्देशानुसार हमारे पार्टी पर अभूतपूर्व रूप से चौतरफा हमला चला रहा है। कम तीव्रता वाली युद्ध (एलआइसी) नीति के तहत विभिन्नों किस्म के सैनिक हमले, सुधार-खैरात, राजनीतिक-सांस्कृतिक, दुष्प्रचार के साथ-साथ प्रति बगावत (काउंटर इन्सर्जेंसी) के तहत कईएक प्रतिक्रान्तिकारी गुंडा गिरोहों को खड़ा कर हमारे क्रान्तिकारी संघर्ष के सामने रोड़ा पैदा कर रहा है। जिस तरह दंडकारण्य में सलवा जुडूम नामक सरकार पोषित मिलिशिया बर्बरता की हदें पार कर दिया है उसी का झारखंडी संस्करण है टीपीसी, एसपीएम सहित अन्य गुंडा गिरोह। इसमें पार्टी से पतित होकर भागे हुए भगोड़े व गद्दारों सहित तमाम किस्म के असमाजिक व अपराधी तत्वों का मिश्रण है। जिनको रूस के 'ब्लैक हैण्ड्रेड' व चीन के 'चेन-को-ताओ' नामक प्रतिक्रान्तिकारी मिलिशियओं के तरह क्रान्तिकारियों की हत्या करना, घरों को जलाना, महिलाओं के साथ छेड़-छाड़ व बलात्कार कर हत्याएं करना इत्यादि जघन्यतम कुकर्म करना है। इनका उद्देश्य शासक वर्ग के उद्देश्यों को पूरा करना है। यानी अर्द्ध सामंती-अर्द्ध औपनिवेशिक समाज व्यवस्था के जगह पर अंकुरित हो रहे नई जनवादी व्यवस्था को नष्ट करना यानी माओवादी को समूल नष्ट करना एवं कारपोरेट घरानों के लूट को बेरोक-टोक जारी रखने के लिए चलाए जा रहे ऑपरेशन ग्रीन हंट को धारदार बनाना है। एक शब्द में कहें तो पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों के दूसरा टीम के रूप में है टीपीसी। इन कुकर्मों के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा इनके सुपारी (रकम) के लिए अलग से पैकेज जारी किए जा रहे हैं। पर इतिहास साक्षी है क्रान्तिकारी आन्दोलन को दबाने के लिए शासक वर्ग चाहे जितना भी कुप्रयास चला ले, सच तो यह है कि शोषित-पीड़ित जनता के दिलों से इस आन्दोलन की अग्रगति के प्रभाव को कोई मिटा नहीं सकता।

का. नितांत और का. रवीन्दर की शहादत से हम मरमाहत जरूर हुए हैं पर हतोत्साहित नहीं। क्योंकि क्रान्तिकारियों की शहादत से वह क्रान्तिकारी उताल तरंगे पैदा होती है जो शासक वर्ग के वजूद को खाख कर डालने की ओर प्रचंड वेग से आगे बढ़ती है। हम इनकी शहादतों से सबक सिखेंगे, आने वाले दिनों में ऐसी घटनाओं को रोकने की भरसक कोशिश करेंगे। शहीद हुए कामरेडों की कमी को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में पार्टी में भर्ती करेंगे। जनता के

राजनीतिक सचेतन्ता को और विकसित कर टीपीसी को जनता से पूरे तौर पर अलग-थलग करेंगे। टीपीसी में भूल भटकाव व शामिल हुए लोगों को अलग होने का बार-बार अह्वान करेंगे। बीच-बीच में काम करने वाले तत्वों को तटस्थ कर उससे अलग-थलग करने के लिए राजनीतिक पहल लेंगे तथा मुट्ठी भर मुख्य दुश्मनों को चिन्हित कर सफाया कर टीपीसी को जड़ से समाप्त करेंगे।

आज पूरे देशभर में प्रतिक्रान्तिकारी मिलिशियाओं सहित ऑपरेशन ग्रीन हंट के खिलाफ विभिन्न तबकों के जनता एकजुट हो रही है। इधर हमारे पीएलजीए बिहार-झारखंड-दण्डकारण्य में युद्ध को ऊंचा स्तर पर विकसित करते हुए ताड़ीमेटला, मुकरम, धरधरिया, कजरा, टंडवा, गारू, बरगढ़, लकड़ाही जैसी शानदार सैनिक कार्रवाईयों को अंजाम देते हुए आगे बढ़ रही है। क्रान्तिकारी जन कमेटी की इकाईयों का जन्म व विकास हो रहा है। इस विकासक्रम को और गति प्रदान करते हुए शहीदों के सच्चे वारिसों के रूप में हजारों-लाखों को गोलबंद करना ही का. नितांत और का. रवीन्दर समेत हजारों वीर शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आइए, इस दिशा में आगे बढ़े एवं का. माओ के इस कथन पर ध्यान केन्द्रित करे जहां उन्होंने कहे हैं "हजारों शहीद बड़े बहादूरी के साथ जनता के लिए अपनी जिन्दगी न्योछावर कर चुके हैं। अइए, हम उनका झंडा बुलंद रखे तथा उनके खून से सिंचे हुए रास्ते पर आगे बढ़ते जाएं।"

कामरेड रामपुकार कोरवा उर्फ शेखर

9 अप्रैल 2012 का दिन हमारी पार्टी, पीएलजीए व शोषित-पीड़ित जनता के लिए एक दु:ख भरा दिन था। इसी दिन शोषित जनता का प्यारा सपूत और पीएलजीए का बहादुर योद्धा, प्लाटून कमांडर कामरेड शेखर ने खुंखार दुश्मनों से लोहा लेते हुए शहादत को प्राप्त की। यह घटना तब घटी जब शासक वर्ग के भाड़े के टटुओं कोबरा, सीआरपीएफ, आईआरबी, झारखण्ड जगुआर आदि सरकारी बल हजारों की संख्या में 'ऑपरेशन ऑक्टोपस' के दौरान चेमो-सानेया गांव के लोगों पर कहर ढाने के लिए बगल की पहाड़ी की तरफ से बढ़ रहे थे। हमारे पीएलजीए के योद्धाओं को इसकी सूचना मिलते ही बिना खाए-पिए सानेया की तरफ दौड़ पड़े और लगभग 10 बजे तक गांव के इर्द-गिर्द पहुंच गए। हालांकि सरकारी सशस्त्र बल कायरों की तरह सुबह 8:30 बजे से ही भारी रॉकेट लांचर व मोर्टारों से गोले दागते हुए आगे बढ़ रहे थे। इन सबको धत्ता बताते हुए पीएलजीए की ओर से लगभग 11:15 बजे से जवाबी हमला शुरू

की गई। हमला व जवाबी हमला का यह सिलसिला शाम 4 बजे तक चलता रहा। जिसमें झारखण्ड जगुआर के एक कमांडेंट सहित आठ से अधिक कोबरा, सीआरपीएफ, आईआरबी व झारखण्ड जगुआर के सिपाही घायल होकर टोपी, मैगजीन, वॉकी-टॉकी आदि सामाग्री फेंकते हुए पीठ दिखाकर उल्टे पांव भागने पर मजबूर हो गए। इसी मुठभेड़ में बहादुरी के साथ दुश्मनों का मुकाबला करते हुए करीब 2:30 बजे हमारे प्यारे योद्धा कामरेड शेखर रणभूमि में शहीद हो गए। इनकी शहादत तब हुई जब वह अपनी जान की परवाह किए बिना सेक्शन के अन्य साथियों को कवर फायर देकर जोखिम भरे जगहों से सुरक्षित स्थानों पर ले जाने के क्रम में अपने सेक्शन के कामरेडों की जान की रक्षा में आगे बढ़कर दुश्मनों का सामना करते समय एक चूक हुई जिससे दुश्मन की गोली लग गई और सदा के लिए अमर हो गए। जीवन के आखिरी पल तक जनता की रक्षा एवं दमनकारी फौजों से लोहा लेते हुए वीरगति को पाने वाले शहीद कामरेड शेखर ने दुश्मनों के नापाक इरादों को तार-तार करते हुए, शहीद नीलाम्बर-पीताम्बर की जन्मभूमि गढ़वा जिला के चेमो-सानेया की रक्षा कर उनकी विरासत को कायम रखा।

कामरेड रामपुकार की बाल्यवस्था

कामरेड रामपुकार का जन्म अप्रैल 1986 में तत्कालीन मध्यप्रदेश (अब छत्तीसगढ़) के सरगुजा जिला अन्तर्गत चान्दो थाना के भूताही गांव में एक गरीब किसान वर्ग के आदिम जनजाति परिवार में हुआ था। माँ जमनी देवी एवं पिता रामसुन्दर कोरवा के पांच संतानों (दो लड़की-तीन लड़कों) में वे तीसरी संतान थे। माता-पिता व भाई-बहनों के लाड-प्यार में पले-बढ़ें कामरेड रामपुकार की पढ़ाई-लिखाई शुरू से ही पुरानपानी आवासीय मिशन स्कूल में हुआ, जो कुसमी थाना में पड़ता है। रामपुकार बचपन से ही चंचल, फूर्तिला व खुला स्वभाव के थे। पढ़ाई में दसवीं तक कभी भी अनुत्तीर्ण नहीं हुए। इनके चंचल मन एवं खुला व सरल स्वभाव के साथ-साथ अपने क्लास के प्रथम पंक्ति के छात्र होने के चलते शिक्षकों द्वारा भी काफी प्यार मिलता था। उम्र के विकास के साथ ही शैक्षणिक ज्ञान के अलावा समाजिक ज्ञान भी अर्जित करने में उनको खूब दिलचस्पी रहती थी। स्कूल की छुट्टियों के दौरान घर आने पर खेती-बारी के काम में माता-पिता व बड़े भाई का हाथ बंटाते थे। हमारे संगठन के कामरेड्स भूताही गांव में जाते तो कमरेड रामपुकार साथियों से मिलते, क्रान्तिकारी गीत व भाषण खूब ध्यान से सुनते थे। दल के साथियों को खाना खिलाना, साथ में रहना

और पार्टी के उद्देश्यों के बारे में जानकारी लेने में उनकी बढ़ती रूचि ने साथियों के मन को मोह लिया था। पार्टी व पीएलजीए के साथियों द्वारा उन्हें वर्ग समाज, वर्गीय शोषण, शोषण के कारण व इससे मुक्ति के उपाय के बारे में बताया जाता एवं पर्चा, बुकलेट, किताब पढ़ने के लिए दिया जाता था। आदिम जनजातियों सहित शोषित-उत्पीड़ित मेहनतकश वर्ग के ऊपर कैसे किन-किन रूपों में सदियों से शोषण ढाए जा रहे हैं और इस शोषण के खिलाफ क्रान्तिकारी विद्रोहों का भी इतिहास भरा पड़ा है तथा मुक्तिकामी संघर्ष आज भी जारी है। यह सब देखकर और जानकार कामरेड रामपुकार के चंचल मन को भीतर से झकझोर दिया और उन्होंने बिना समय गंवाए दसवीं से आगे की अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़कर 16 जुलाई 2006 से ही एक पेशेवर क्रान्तिकारी के रूप में पार्टी का झण्डा थाम लिया।

क्रान्तिकारी डगर पर डग भरते कामरेड रामपुकार

कामरेड रामपुकार पार्टी में सबसे पहले एलजीएस फार्मेशन में शामिल होकर क्रान्तिकारी काम की शुरूआत की। उस फार्मेशन में बहुत कम समय में सभी साथियों के साथ घुल-मिल गए एवं पुराने साथियों की तरह हर काम में पहलकदमी लेने लगे। पुराने साथियों से सीखने, अनपढ़ साथियों को पढ़ाने एवं कमांडर, कमिस्सार के हर आदेशों का अनुशासनबद्ध तरीके से पालन करने के चलते सभी साथियों के बीच सर्वप्रिय बन गए। सैनिक कार्रवाइयों में शुरू से ही आत्मबलिदान की भावना से दुश्मनों का डटकर मुकाबला करते थे। उनकी यह सब कार्यकुशलता को देखते हुए जून 2007 में एलजीएस कमांडर की जिम्मेवारी दी गयी। अपनी जिम्मेवारी को कुशलता के साथ पालन करते हुए अपनी दक्षता को बढ़ाते रहे। इस फार्मेशन में रहते हुए उन्होंने 2 अगस्त 2008 को सरगुजा जिले के चुनचुना एम्बुश में भाग लिए। जिसमें 7 पुलिस का सफाया व 8 को घायल किया गया था। इसी के बगल में 22 अप्रैल 2011 को सवाग के चलचलचुआं ढिबीडीह जंगल के ऐम्बुश में भी इनकी भूमिका काफी सराहनीय रहा। जिसमें दो पुलिस का सफाया हुआ था। इसके अलावा अम्बा डिहरा मुठभेड़ सहित कई छोटे व मंझौले स्तर के कार्रवाइयों में अपने फारमेशन का संचालन करते हुए प्रथम पंक्ति के कमांडरों के समतुल्य भूमिका अदा किए। इनके बढ़ते सैनिक व राजनीतिक क्षमता को देखते हुए 21 जनवरी 2010 को एलजीएस से सीधा सब जोनल स्तर देकर सीसी 1 कंपनी में शामिल कर प्लाटून कमांडर की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी दी गयी। तब से लेकर आखिरी सांस तक अपनी जिम्मेवारी

को क्रान्तिकारी दृढ़ता के साथ पालन किया। इस दौरान उन्होंने 17 जुलाई 2010 को लातेहार के बरवाडीह थाना अन्तर्गत यमुनिया नाला एम्बुश में भाग लिया जिसमें पांच पुलिस का सफाया कर पांच राइफल जब्त किया गया था। 3 मई 2011 को लोहरदगा के धरधरिया एरिया एम्बुश की कार्रवाई जिसमें 14 पुलिस का सफाया कर 61 को घायल किया गया था। यह कार्रवाई झारखण्ड सरकार की चुलें हिलाकर रख दिया था। इस बड़े सैनिक कार्रवाई के बाद एक के बाद एक बड़ी कार्रवाइयों में अग्रीम भूमिका निभाते रहे तथा साहस व बहादुरी का परिचय देते हुए दुश्मन के दांत खट्टे करते रहे। 1 अगस्त 2011 को लातेहार के गनईखांड़ (पिरी) में हमारे बैठक स्थल पर दुश्मनों का हमला होने की खबर सुनकर कामरेड शेखर 4 किलोमीटर की दूरी से अपने फारमेशन के साथ दौड़ते हुए मुठभेड़ स्थल पर आकर दुश्मनों का डटकर कार्यनीतिक जवाब दिए तथा नेतृत्व सहित तमाम साथियों की रक्षा करते हुए दुश्मनों को उल्टे पांव भागने पर मजबूर कर दिया। हालांकि इस कार्रवाई में भी हमारे एक बहादुर साथी कामरेड नरेश शहीद हुए थे। इसमें भी कामरेड शेखर की अग्रणी भूमिका के साथ-साथ नए कला-कौशल का आश्चर्यजनक प्रदर्शन रहा था। जिससे कोबरा, सीआरपीएफ, झारखण्ड जगुआर आदि सरकारी सैन्य बलों को टेन्ट, दरी आदि सामान छोड़कर भागना पड़ा था और पांच किलोमीटर तक पीछा किया गया था। 7 नवंबर 2011 को लातेहार के कोने स्कूल में स्थापित पुलिस कैंप पर एक बड़े रेड के दौरान 6 पुलिस घायल हुए थे। इसमें कुछ टेक्नीकल भूल के कारण रेड असफल रहा। इस विफलता के बाद भी इनके जोश-खरोश में कोई कमी नहीं आई और चन्द दिनों बाद ही 16 नवम्बर को सरयू घाटी में एक माइन प्रूफ गाड़ी को लक्ष्य किया। जिसमें भूलवश ट्रेक्टर निशाना बन गया था, जो पुलिस का जनरेटर लेकर जा रहा था। इसमें भी उनकी पहलकदमी सराहनीय थी। इन सारे व्यवाहारिक अनुभवों से सीखते हुए अपने इरादे को और मजबूत बनाया तथा 3 दिसंबर 2011 को गारू के सतनदिया के पास कटर प्रतिक्रियावादी नेता, चतरा के सांसद व झारखण्ड विधानसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष इन्दर सिंह नामधारी के काफिले पर हमारे पीएलजीए ने हमला किया था जिसमें नामधारी तो बाल-बाल बच निकला पर उनके सुरक्षा में पीछे से आ रही बुलेट प्रूफ 407 गाड़ी विस्फोट के निशाने में आ गई जिसमें 11 पुलिस मारे गए व एक घायल हुआ तथा सभी हथियार जब्त कर लिए गए। इस कार्रवाई में भी का. शेखर की भूमिका अत्यंत सराहनीय व प्रेरणा योग्य थी। फिर अगले ही महीना यानी 21 जनवरी 2012 को भंडरिया

के सालो जंगल में ऑपरेशन तोड़ के तहत एम्बुस की कार्रवाइ की गयी। जिसमें माईनप्रुफ वाहन को तोड़कर 13 पुलिस का सफाया व 2 को घायल करते हुए 14 हथियार जब्त कर लिया गया तथा गढ़वा के जिला परिषद अध्यक्ष व उसके सरकारी अंगरक्षक सहित 4 लोगों को गिरफ्तार कर दुश्मन के सामने एक जबरदस्त चुनौती पेश की गई। पीएलजीए की इस शानदार व सफल कार्रवाई में कामरेड शेखर की शानदार भूमिका को विशेष रूप से उल्लेख किए बिना नहीं रहा जा सकता। 5 अप्रैल 2012 को बरवाडीह के करमडीह में 'ऑपरेशन ऑक्टोपस ब्रेक' के तहत हमला कर कोबरा के एक पुलिस का सफाया व 2 कोबरा घायल कर एक हेलीकॉप्टर को क्षतिग्रस्त कर भारी मात्रा में खाद्य सामग्री जब्त किया गया। इसमें खासकर हेलिकॉप्टर को निशाना बनाकर क्षतिग्रस्त करने में उनकी ही भूमिका थी, जो लड़खड़ाते हुए किसी तरह बच निकला। उक्त सभी कार्रवाइयों में अग्रीम पंक्ति के कमांडरों के साथ तालमेल पूर्ण तरीके से भूमिका अदा कर बहादुरी का मिशाल पेश किये। चाहे गनईखाड़ (पिरी) की मूठभेड़ हो या सानेया की, सभी कार्रवाईयों में शुरू से ही उनके अंदर अपनी जान से बढ़कर दूसरे साथियों के जान को महत्व देने की विशेषता जीवन के आखिरी पल तक झलकता रहा। इस तरह कामरेड शेखर ने जबसे क्रान्ति के पथ पर पांव रखा तब से कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। दुश्मन के खिलाफ छोट-छोटी कार्रवाइयों में भाग लेकर लड़ना शुरू किया और देखते ही देखते दुश्मन के खिलाफ बड़ी से बड़ी कार्रवाइयों में शेर की तरह दहाड़ने लगें। हजारों-हजार दुश्मन के सैन्य बलों के युद्ध अभियानों का शानदार तरीके से मुंहतोड़ जवाब देते हुए कामरेड शेखर ने अपने प्राण क्रान्ति की बलिवेदी पर निछावर किया। इस प्रकार पार्टी ने एक स्थानीय व सक्षम नेता को खोया, पीएलजीए ने एक बहादुर व काबिल कमांडर को खोया और स्थानीय जनता ने अपना एक प्यारा-दुलारा साथी को खो दिया। अहम्, झूठी प्रतिष्ठा, नौकरशाही, तानाशाही जैसे गैर सर्वहारा रूझानों से कोसो दूर रहकर कमांडर के साथ-साथ एक नेतृत्व के रूप में भी उभरते हुए लाल सितारा के रूप में काफी संभावनाएं थी। शहादत के कुछ ही रोज पहले बिहार रिजनल कमेटी इनकी पार्टी स्तर बढ़ाकर जोनल स्तर कर दिया था।

कामरेड रामपुकार उर्फ शेखर के आदर्श हमें सदा प्रेरणा देती रहेंगी

मीठे बोल, हंसमुख चेहरा, सरल स्वभाव सभी से आदरपूर्वक पेश आना, गतिशीलता, पारदर्शिता आदि इनके खास गुण थे। दुश्मन के भीषण दमन के बीच भी

वह अपना शान्तचित व्यक्तित्व बनाए रखते थे। और दूसरे साथियों में आत्मविश्वास भरते थे। वह अपनी गंभीरता, लगन, शोषित जनता के लिए गहरी प्रतिबद्धता, मेहनत रचनात्मक और उन्हें दिए जाने वाले काम को पूरा करने की गहरी लगन और अपने जुझारू व्यक्तित्व के लिए जाने जाते थे। सूझबूझ, साहस और धैर्य के एक प्रतीक थे। दुश्मन के आने की समाचार मिलते ही यह बात जरूर बोल पड़ते "दुश्मन फिर हमारे जनता पर कहर ढाने, जान-माल का नुकशान पहुंचाने आ रहा है, चलो कामरेडों उसे फिर मारेंगे" और अपनी कंपनी के साथ दुश्मन के हमलों का मुकाबला हेतु हंसते हुए चल पड़ते थे। अपने फारमेशन में हर जोखिम भरा जिम्मेवारी वे खुद लिया करते थे। वह एक कमांडर के साथ-साथ अपने फारमेशन के डॉक्टर भी थे। साथियों व जनता का इलाज करने के लिए दवा का भी एक बैग हमेशा साथ में रखते थे। इतना ही नहीं युद्ध में अपने घायल साथियों के अलावा दुश्मन के घायल सिपाहियों का भी प्राथमिक इलाज करते थे। कामरेड शेखर की शहादत से हमने आज एक लड़ाकू योद्धा व उभरता हुआ राजनीतिक नेतृत्व के साथ-साथ उभरता हुआ क्रान्तिकारी डॉक्टर को भी खोया है। कई गुणों के साथ विकसित हो रहे कामरेड शेखर को देखकर नेतृत्व को भी उन पर काफी भरोसा था। उनकी शहादत की खबर सुनकर क्रांतिकारी कतारों व जनता में शोक की लहर दौड़ गई, सभी के आंख आंसुओं से छलछला उठे, मातम सा छा गया व पूरा पीएलजीए तथा उपस्थित नेतृत्व क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गए। सभी के जुबां पर यही बात बार-बार उभरने लगे कि अपने जान की बाजी लगाकर दूसरे साथियों की जान बचाने वाले योद्धा को दुश्मन ने आज हमसे छीन लिया। पीएलजीए के साथियों ने भी अपनी जान की प्रवाह किए बिना दुश्मन से मुकाबला करते हुए उनके हथियार सहित पार्थिव शरीर को मुठभेड़ स्थल से बाहर सुरक्षित स्थान पर ले जाने में सफल रहे। वहां शोक सभा का आयोजन कर सीएमसी, सैक, एसएमसी सहित उपस्थित नीचे-नीचे तक तमाम कमेटियों-कमांडों व सदस्यों द्वारा दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित कर उन्हें नम आंखों से अंतिम विदाई दी गई।

कामरेड शेखर की शहादत से हम मर्माहत जरूर हुए हैं पर हतोत्साहित नहीं। क्योंकि क्रान्तिकारियों की शहादत से क्रान्तिकारी संघर्ष में वह ज्वार पैदा होती है, जो शासक वर्ग के सिंहासन को मटियामेट कर डालने के लिए प्रचंड गति से आगे बढ़ती है। हम यह भी जानते हैं कि जो जन्म लेते हैं उन्हें एक न एक दिन मरना ही है। जो वस्तु का निर्माण हो चुका है उसे निश्चित एक न एक दिन नष्ट होना ही बिना अपवाद के प्रकृति का अनिवार्य नियम है। पर मौत के सन्दर्भ में चीन के प्राचीन लेखक श्मा

छ्येन ने कहा है कि "मौत का सामना सब लोगों को समान रूप से करना पड़ता है परन्तु कुछ लोगों की मौत की अहमियत थाई पर्वत से भी ज्यादा भारी होता है, और कुछ लोगों की पंख से भी हल्की।" जनता के लिए प्राण निछावर करना थाई पर्वत से भी ज्यादा भारी अहमियत रखता है, जबकि फासिस्टों के लिए तथा शोषकों व उत्पीड़कों के लिए जान देना पंख से भी ज्यादा हल्की अहमियत रखता है। कामरेड शेखर भी शोषित-पीड़ित मेहनतकश वर्ग की मुक्ति युद्ध में लड़ते हुए उनके लिए प्राण न्योछावर किए हैं, निश्चित ही उनकी मौत की अहमियत हिमालय से भी ज्यादा भारी अहमियत रखता है। नक्सलबाड़ी से लेकर अब तक 13 हजार से अधिक महान शहीदों ने शहादत की जिस गौरवशाली परंपरा को रौशन किए हैं, उस गौरव को कामरेड शेखर ने और बढ़ाया है। क्रान्तिकारी पार्टी, पीएलजीए और संघर्षशील जनता के सर को और ऊंचा किए हैं। शहीद शेखर के खून में पार्टी के लाल झण्डे का लाल रंग को और गाढ़ा किया है। दुबला-पतला-सांवला छरहरे लम्बे कद वाले कामरेड शेखर काया (शरीर) से तो हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन उन्होंने जो आदर्श हमारे सामने पेश किए हैं जिस तरह खुद को एक नमूना के तौर पर हमारे सामने पेश किया है, उसे हमारी पार्टी, पीएलजीए व जनता कभी भूल नहीं पाएगी, वे सदा-सदा के लिए अमर बनकर हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे। इतना ही नहीं कामरेड शेखर जिस परिवार से आए थे उस परिवार व उनके आने वाले पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का काम करेंगे।

साथियों,

जिस तरह आज साम्राज्यवादियों के इशारे पर भारतीय दलाल केन्द्र व तमाम राज्य सरकारें हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) एवं शोषित-उत्पीड़ित मेहनतकश वर्ग के ऊपर साम्राज्यवादियों का अत्यंत क्रूर प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध नीति एलआइसी के तहत अभूतपूर्व चौतरफा हमला चला रहे हैं। उसका उद्देश्य साफ है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लूट को बेरोकटोक अबाध गति से जारी रखना एवं अर्द्धसामंती -अर्द्धऔपनिवेशिक भारतीय समाज में अंकुरित हो रही नई जनवादी व्यवस्था के भ्रूण को कुचलना। जनता (आदिवासी व गैर आदिवासी दोनों) को प्रकृति प्रदत उनके जल-जंगल-जमीन व खनिज संपदाओं से बेदखल कर विस्थापित किया जा रहा है। जिन पर उनका शाश्वत व जन्मसिद्ध अधिकार रहा है। स्पेशल इकोनॉमिक जोन (सेज), बड़े-बड़े डैम, प्लांट, रेस्टूरेंट आदि के लिए कार्पोरेट घरानों के साथ दलाल सरकारों का सैंकड़ों इकरारनामा किया जा चुका है। इस साम्राज्यवादी एजेंडा को लागू करने के लिए विस्थापन समस्या विकराल होता जा रहा है। इससे विस्थापित जनता का अस्तित्व अधर में लटकते जा

रहा है। अपने अस्तित्व-अस्मिता सहित जल-जंगल-जमीन व जमीन के अन्दर छीपे अपार खनिज संपदाओं की रक्षा के लिए झारखण्ड-छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश की जनता प्रतिरोधी संघर्ष तेज करने को बाध्य है। झारखण्ड के उत्तरी कोयल जलाशय परियोजना (कुटकू डैम), बेतला व्याघ्र परियोजना एवं छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिला अन्तर्गत कन्हार डैम परियोजना से प्रभावित लगभग 80 गांव की जनता 1980 के दशक से ही विस्थापन विरोधी जुझारू जन आन्दोलन चला रही है। जिसका नेतृत्व प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से हमारी पार्टी करते आई है। जिसके चलते साम्राज्यवादी एजेंडे को दलाल भारतीय सरकार को पूरा करने में एक बड़ी बाधा हो रही है। जिससे बौखलाकर शासक वर्ग द्वारा ऑपरेशन ग्रीन हंट के द्वारा पलामू प्रमण्डल में ऑपरेशन ऑक्टोपस सहित विभिन्न नामों से युद्ध अभियान चलाकर विस्थापन विरोधी जन आन्दोलन को क्रूरतापूर्वक कुचलने का नापाक कोशिश जारी है। और ये सब षड्यंत्र देश के विकास के नाम पर किया जा रहा है। इस क्रूर सैन्य हमले के जवाब में ही 'ऑपरेशन ऑक्टोपस ब्रेक' के तहत दुश्मनों के बुरे मंसूबों को तार-तार करते हुए कामरेड शेखर शहीद हुए हैं। आज देश-दुनिया के पैमाने पर प्रगतिशील बुद्धिजीवियों, न्यायपसंद समाज प्रेमियों द्वारा ऑपरेशन ग्रीन हंट नामक इस क्रूर अघोषित युद्ध अभियान का विरोध किया जा रहा है। इसे अन्यायपूर्ण युद्ध करार दिया जा रहा है। इधर हमारे पार्टी, पीएलजीए एवं क्रान्तिकारी जनता द्वारा बिहार, झारखण्ड, दण्डकारण्य, बंगाल, ओडिशा, महाराष्ट्र आंध्रप्रदेश सहित देश के विभिन्न भू-भागों में प्रतिरोध कार्रवाइयां तेज कर मिशालें पेश की जा रही है। वैकल्पिक सत्ता के रूप में कहीं-कहीं जनताना सरकार अस्तित्व में आई है। बाकी जगह पर गठन व विकास करने की प्रक्रिया जारी है। वर्ग संघर्ष की विकास की इस अग्रगति को और तेज करना एवं छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित कर छापामार क्षेत्रों को आधार क्षेत्र व पीएलजीए को पीएलए में विकसित करने की दिशा में बड़े-बड़े डग भरते हुए नई जनवादी क्रान्ति की सफलता की मंजिल की ओर बढ़ते जाना ही कामरेड शेखर सहित तमाम अमर शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अतः दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी अपने अधिनस्थ पार्टी, पीएलजीए व जनसंगठन के तमाम कतारों सहित मजदूर-किसान, छात्र-नौजवान, महिलाएं, दलित आदिवासी प्रगतिशील बुद्धिजीवी व न्यायपसंद समाज प्रेमियों से विनम्रतापूर्वक आह्वान करती है कि कामरेड शेखर की शहादत से जो आंखों में आंसू है उसे अंगार में, जो दिलों में मर्मवेदना है उसे आक्रोश में एवं शोक को संकल्प में बदल डालें। उनके अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए पार्टी, पीएलजीए, संयुक्त मोर्चे को मजबूत करें एवं

हजारों–लाखों उतराधिकारियों के रूप में विकसित करें। समय और परिस्थिति की यही पुकार है। शहीदों की विरासत को कायम रखते हुए उनके खून से सींचे रास्ते से क्रान्ति की विजय मंजिल तक बिना रूके बढ़ते जाना ही हम क्रान्तिकारियों का परम कर्तव्य है। वर्ग संघर्ष के चमकते लाल सितारों की लालिमा को बढ़ाने के लिए दुनिया के शोषितों का महान दार्शनिक कामरेड माओ त्सेतुंङ की इस सु–प्रसिद्ध कथन पर गौर करें, उसका अनुसरण करें "हजारों शहीद बड़ी बहादुरी के साथ जनता के लिए अपनी जिन्दगी निछावर कर चुके हैं; आइए, हम उनका झण्डा बुलंद रखें तथा उनके खून से सींचे हुए रास्ते पर आगे बढ़ते जाएं।"

- **इंकलाब जिन्दाबाद!**
- **भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिन्दाबाद!**
- **शहीद कामरेड शैलेन्द्रसिंह उर्फ नितांत अमर रहें**
- **शहीद कामरेड रविन्दर मेहता अमर रहें!**
- **वीर शहीद कामरेड रामपुकार उर्फ शेखर अमर रहें!**
- **अमर शहीद कामरेडों को लाल सलाम!**
- **अमर शहीदों के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए ऑपरेशन ग्रीन हंट को ध्वस्त करें!**
- **छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में, छापामार क्षेत्र को आधार क्षेत्र में एवं पीएलजीए को पीएलए में विकसित करें।**
- **नवजनवादी क्रांति जिन्दाबाद!**

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ,

भाकपा (माओवादी)

अप्रैल 2013 **दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी**

(...आखिरी पन्ने का शेष)

वर्ग संघर्ष को हरगिज न भूलते थे
अप्रतिम आचार विचारों में
बन्धु-बान्धवो के रक्षक थे
सूक्ष्म से सूक्ष्म ग्रहणता में
स्थूल को छोड़ देते थे
मिथ्या छोड़ सत्य की खोज में
अन्तरवस्तु तक पहुंच जाते थे
सरल तोतली बोली में
किसी को भी ढंग से समझाया करते थे
वर्ग संघर्ष की कुंजी में
उथलेपन से गहरेपन की ओर बढ़ते थे
द्वेष के पालतू कुत्ते के विरुद्ध संघर्ष में
सर्वोपरि विधि निर्माता थे
लोकयुद्ध के वांछनीय नजर में
स्व से लड़ने कहते थे
बहुत घातक विषैले हथियार के हाथों में
मगर बिजली की तलवार थे
इसलिए मुक्ति के आलोकित पथ में
गोलियों की धुआंधार वर्षा की परवाह न कर पाते थे
जीवन के अन्तिम दौर में
भौंहें तने कुर्बानी चुप रहे थे
सपनों के साथी न रह पाया जग में
हर जनता के नयनों के तारे थे

दिनांक : 10 अप्रैल 2012

कामरेड शेखर की स्मृति में...

वीरों की शहादती श्रृंखला में
कामरेड शेखर कदम व कदम बढ़ते जाते थे
अप्रैल माह के गर्मी में
उमंग भरे सपने पूरा करने चले थे
नई जनवादी राज्य कायम करने हेतु
बहादुरी की वीरताई थे
झकझोरती पछुआ हवा के बीच ऑपरेशन ऑक्टोपस में
अजीब सी शर्मीले मुश्कान थे
मस्तिष्क के तर्कोन्मुख में
क्रान्ति के आंगन में झिलमिल सितारे थे
हर उत्पादन के प्रोत्साहन में

(शेष अंदर के पन्ने में...)